महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय

वर्धा (महाराष्ट्र)

कार्यवृत्त

विद्या-परिषद् की विशेष बैठक

18 सितंबर, 2006

सभा-कक्ष, विश्वविद्यालय विस्तार कार्यालय, क्रीड़ा संकुल भवन,
जाजू वाडी, वर्धा (महाराष्ट्र)

सुबह 11:30 बजे

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय

विद्या-परिषद् की विशेष बैठक

कार्यवृत्त

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की विद्या-परिषद् की विशेष बैठक कुलपति की अध्यक्षता में दिनांक 18 सितंबर, 2006 को सुबह 10:30 बजे विश्वविद्यालय विस्तार कार्यालय, क्रीड़ा संकुल भवन, जाजू वाड़ी, वर्धा के सभाकक्ष में संपन्न हुई। बैठक में निम्नांकित उपस्थित हुए :

1)	प्रो. जी. गोपीनाथन	:	अध्यक्ष एवं कुलपति, म.ग.अ.हि.वि., वर्धा।
2)	प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी	:	सदस्य
3)	डा. एस. तंकमणि अम्मा	:	सदस्य
4)	प्रो. गंगा प्रसाद विमल	:	सदस्य
5)	श्री गोविंद मिश्र	:	सदस्य
6)	प्रो. टी. आर. भट्ट	:	सदस्य
7)	श्री बालकृष्ण पिल्लई	:	सदस्य
8)	डा. भास्कराचार्य त्रिपाठी	:	सदस्य
9)	डॉ. (श्रीमती) माजिदा असद	:	सदस्य
10)	प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	:	सदस्य

अन्य सदस्य – प्रो. ए. अरविंदाक्षण, प्रो. प्रभाकर श्रोत्रिय, प्रो. उदय नारायण सिंह, श्री एस. आर. फारूकी, प्रो. इंदिरा गोस्वामी, प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी, प्रो. नित्यानंद तिवारी, श्रीमती मृदुला गर्ग, श्री मधु मंगेश कर्णिक तथा डा. रामदयाल मुण्डा, प्रो. राम गोपाल बजाज, प्रो. राम गोपाल गुप्ता, अन्यत्र पूर्व प्रतिश्रुत होने के कारण बैठक में उपस्थित न हो सके।

बैठक में विश्वविद्यालय के विज़न प्लान पर चर्चा हुई। विद्या-परिषद् द्वारा की गई अनुशंसाएँ नीचे दी गयी हैं तथा बैठक में प्रस्तुत विषय पर हुई चर्चा के अनुसरण में संशोधित विज़न प्लान *(दृष्टि तथा लक्ष्य)* संलग्न है :

गाँधीवादी दृष्टिकोण की प्रासंगिकता एवं अनुप्रयोग : विद्या-परिषद् ने इस बैठक में अपना यह मत व्यक्त किया कि चूंकि इस विश्वविद्यालय का नाम महात्मा गाँधी जी के नाम पर है तथा इसकी स्थापना उनकी कर्मभूमि वर्धा में की गयी है और यहाँ के पाठ्यक्रमों में भी गांधी

दर्शन पर काफी ज़ोर दिया जाता है, इसलिए विश्वविद्यालय से सम्बंधित कोई भी निर्णय लेते समय सरकार और विज़िटर द्वारा इन तथ्यों को विशेष ध्यान में रखा जाना चाहिए।

विश्वविद्यालय के प्रांगण में कोई गांधी कुटी, गांधी प्रतिमा भी होनी चाहिए जहाँ हफ़्ते में एक बार प्रार्थनाएँ हों साथ ही सर्वधर्म प्रार्थना को बढ़ावा दिया जाए। इसमें सभी को सपरिवार भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाए।

विश्वविद्यालय के प्रांगण में कुछ ऐसी जमीन भी होनी चाहिए जिसमें अध्यापक, कर्मचारी, छात्र-छात्राएँ, आदि वहाँ आकर श्रम करें/श्रमदान करें तथा यह कार्य नियमित रूप से स्वेच्छा से किया जाए। पेड़-पौधे लगाने में भी विद्यार्थियों, अध्यापकों और अन्य कर्मचारियों की भूमिका होनी चाहिए।

पर्व-त्योहार की तरह एक कुछ ऐसा तय किया जाए कि खास दिनों में सभी व्यक्ति अपनी स्वेच्छा से गांधीवादी प्रेरणा को बढ़ावा देने के लिए खादी वेशभूषा धारण करें। इसके लिए पदाधिकारियों, अध्यापकों आदि को आगे बढ़कर कार्य करने की आवश्यकता व्यक्त की गई जिसके प्रभाव से अन्य लोग भी स्वेच्छा से इसे अपनाने का प्रयास करेंगे।

विदेशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार : चूंकि विदेशों में हिन्दी प्रचार-प्रसार का कार्य संसद ने महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय को ही दिया है तथा इस विश्वविद्यालय के अधिनियम के अनुसार इसका एक लक्ष्य हिन्दी भाषा और साहित्य का संवर्द्धन और विश्वभाषा के रूप में हिन्दी का विकास भी है अतः इस तरह के कार्य को मंत्रालय द्वारा महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय को भी सौंपा जाना चाहिए ताकि विदेशों में हिन्दी के विभाग और केन्द्र खोलने व उसे बनाए रखने का काम यह विश्वविद्यालय कर सके। इस विश्वविद्यालय को विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ तथा ऐसे विदेशी संस्थाओं से जोड़ा जाए जो उच्चस्तरीय हिन्दी प्रचार-प्रसार का कार्य कर रही हों।
हमारे पड़ोसी देश जैसे– नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, चीन, श्रीलंका, आदि के विश्वविद्यालयों व हिन्दी संस्थाओं से हिन्दी के प्रचार-प्रसार के कार्य में महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय को जोड़ने का प्रयास किया जाए।

अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ : अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ का नाम में 'निर्वचन' शब्द से उसकी सार्थकता स्पष्ट न होने के कारण इसे हिन्दी में परिवर्तित नाम 'अनुवाद एवं मौखिक भाषांतरण' करने का सुझाव विद्या-परिषद् के सदस्यों द्वारा दी गयी। चूंकि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की मानक शब्दावली में 'Interpretation' के लिए 'निर्वचन' शब्द का प्रयोग किया गया है अतः सदस्यों ने यह सुझाव दिया कि इस तरह की गलती से वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग को अवगत कराया जाए ताकि शब्दकोश में सही शब्दों का समावेश किया जाए।

अंग्रेज़ी के प्रध्यापकों की आवश्यकता : चूंकि अनुवाद के लिए अन्य भाषाओं के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता है अतः विश्वविद्यालय में अनुवाद विद्यापीठ को सशक्त आधार देने के लिए अंग्रेज़ी में प्रध्यापकों की आवश्यकता को देखते हुए विद्या-परिषद् द्वारा अंग्रेजी प्रध्यापकों को भी विश्वविद्यालय में रखने का सुझाव दिया।

तमिलनाडु सरकार द्वारा सहयोग : विश्वविद्यालय द्वारा तमिल पाठ्यक्रम आरंभ किया जा रहा है अतः इसी सिलसिले में तमिलनाडु सरकार से इस विश्वविद्यालय में 1 प्रोफेसर, 1 व्याख्याता तथा 2 शोध सहायक विश्वविद्यालय को उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया। विद्या-परिषद् के सदस्यों द्वारा इस संदर्भ में आवश्यक कार्रवाई करने के लिए कुलपति को अधिकृत किया।

विज्ञापित पदों पर नियुक्ति : बैठक में विश्वविद्यालय की आवश्यकता को दृष्टि में रखते हुए विश्वविद्यालय में रिक्त पदों पर नियुक्ति की प्रक्रिया को यथासंभव जारी रखने तथा जहाँ आवश्यक हो, पुनः विज्ञापित करने का सुझाव दिया गया।

विज़न प्लान : समिति द्वारा विश्वविद्यालय की विज़न प्लान में कुछ संशोधन करके उसे स्वीकृति प्रदान की। (*प्रति संलग्न है*)

बैठक की समाप्ति सभी उपस्थित सदस्यों द्वारा कुलपति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने एवं कुलपति द्वारा धन्यवाद करने के साथ हुई।

(प्रो. जी. गोपीनाथन)
कुलपति
महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय

वर्धा (महाराष्ट्र)

विज़न प्लान

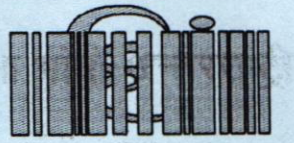

दृष्टि तथा लक्ष्य

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय — एक अद्वितीय और वैकल्पिक संस्था

राष्ट्रीय नेताओं और हिन्दी प्रेमियों की यह एक महती चिरकालीन आकांक्षा रही है कि हिन्दी भारतीय की भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ के अन्तरराष्ट्रीय मंच पर अपना न्यायोचित स्थान ग्रहण करे। दूसरी, उनकी यह सोच भी थी कि न केवल विदेशों में अपितु समूचे विश्व में फैले हुए भारतीय मूल के व्यक्तियों के बीच भाषायी आदान-प्रदान के समन्वय हेतु हिन्दी का एक अन्तरराष्ट्रीय सचिवालय स्थापित किया जाए। इसके अतिरिक्त उनकी यह भी परिकल्पना थी कि अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी की संपूर्ण संभावनाओं के विकास और संवर्द्धन के लिए एक केन्द्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना की जाए। उनका यह सपना सन् 1997 में महाराष्ट्र में महात्मा गांधी की कर्मभूमि वर्धा में महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना के रूप में साकार हुआ। ऐसा जान पड़ता है कि अन्य दो सपने भी, जिनका पूर्वोल्लेख हो चुका है महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के माध्यम से मूर्त्तरूप लेंगे।

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय ईस्वी संवत की सहस्राब्दि के अंतिम दशक में अस्तित्व में आया तथा यह नई सहस्राब्दी के प्रथम दशक के दौरान अपने पूर्ण ओज और शक्ति के साथ कार्य करने लगा है। वस्तुतः यह अपने विकास के निर्णायक दौर में गुज़र रहा है। भारत के ज्ञानाधार को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता है, जिसके लिए नूतनातिनूतन विकल्प तलाशे जा रहे हैं। महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की परिकल्पना शिक्षा के एक वैकल्पिक संस्था के रूप में की गई है, जो असामान्य और प्रत्यक्षतः अतार्किक पार्श्विक चिंतन प्रक्रिया की परिणति है। इस प्रक्रिया में 'गेंबा-कैज़न' का सतत लक्ष्य प्राप्त करने के लिए मूल्य अभियांत्रिकी की तकनीकों का उपयोग किया जाता है अर्थात् लागत को प्रभावित करने वाली नीतियों का अनुगमन कर शैक्षिक प्रविधियों और प्रक्रियाओं को नूतन रूप और आकार प्रदान करने का अनवरत प्रयास है।

महात्मा गांधी का नाम ही इस विश्वविद्यालय को शांति और अहिंसा, स्त्री अध्ययन, प्रौद्योगिकी और व्यवसाय की वैकल्पिक भाषा के रूप में हिन्दी के विकास के लिए पाठ्यचर्यापरक अध्ययन की तैयारी करने की ओर प्रवृत्त करता है।

वैयक्तिक और सामाजिक परिपूर्णता के लिए एक-साथ अवसर प्रदान करना गांधीवाद का लक्ष्य है। नैतिक व्यवहार, विश्वबंधुत्व तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान गांधीवादी विचारधारा के बुनियादी सिद्धांत है। महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों और पाठ्यचर्याओं में मूल सिद्धांत आदि से लेकर अंत तक समाविष्ट है। अतः स्वभावतः म.गां.अ.हिं.वि. की कार्य संस्कृति, पाठ्यचर्चा और पाठ्यक्रमों तथा प्रशासन-तंत्र में गांधीवादी विचारधारा प्रचुर मात्रा में परिलक्षित होगी।

यह कहना गलत न होगा कि महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय एक अद्वितीय विश्वविद्यालय है, जिसकी परिकल्पना अपने आयाम में एक ऐसे ज्ञानाधार के रूप में की गई है जो विश्वजनीन है। यह मुख्यतः एक आवासीय विश्वविद्यालय होगा, लेकिन इसके अध्ययन-केंद्रों के देश भर में ही नहीं, विदेशों तक फैलने की पूरी संभावना है।

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय स्वतः एक अन्तरराष्ट्रीय मंच के रूप में कार्य करेगा जो अपने उद्दिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी से संचालित और भारतीय मानस और परंपराओं में उच्चतर शिक्षा पाठ्यक्रम चलाएगा।

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के चार विद्यापीठ

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के अधिनियम के अंतर्गत चार विद्यापीठों की स्थापना की गई है, जिनके नाम हैं :

1. भाषा विद्यापीठ
2. साहित्य विद्यापीठ
3. संस्कृति विद्यापीठ
4. अनुवाद एवं मौखिक भाषांतरण विद्यापीठ

इनके अतिरिक्त एक सूचना प्रौद्योगिकी केन्द्र अर्थात् ललित कलाओं के लिए एक सूचना विज्ञान प्रयोगशाला की भी परिकल्पना की गई है, जो संप्रति स्थापित हो चुकी है।

भाषा विद्यापीठ

भाषा विद्यापीठ के अंतर्गत भाषा-प्रौद्योगिकी में एम.ए. तथा एम.फिल. पाठ्यक्रम तथा पी-एच.डी. कार्यक्रम प्रारंभ हो चुका है। इसके अतिरिक्त भाषा प्रौद्योगिकी में एम.टैक पाठ्यक्रम भी भारत सरकार के संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के उन्नत संगणन विकास केन्द्र (सी.-डैक) नोएडा के सहयोग से आरंभ किया गया है जिसे बाद में निवनिर्मित प्रौद्योगिकी विद्यापीठ में स्थानांतरित किए जाने का प्रस्ताव है। साथ ही, इण्डो-वर्ड-नेट, भाषा मानचित्रावली (लिंग्विस्टिक एटलस) और भारतीय लिपियों पर किए जाने वाले कार्य को भी उद्धृत किया जा सकता है।

साहित्य विद्यापीठ

साहित्य विद्यापीठ के अंतर्गत संप्रति एम.ए. हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य) तथा एम.फिल. हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य) पाठ्यक्रम तथा पी-एच.डी. कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय में दलित साहित्य पर भी एक पाठ्यक्रम प्रारंभ करने का प्रस्ताव है।

संस्कृति विद्यापीठ

संस्कृति विद्यापीठ के अध्ययन के विषयों में मानवीय अध्ययन के कुछेक अत्यंत नूतन तथा संवेदनशील क्षेत्रों में यथा– एम.ए. अहिंसा एवं शांति अध्ययन, एम.ए. स्त्री अध्ययन, एम.ए. जनसंचार माध्यम एवं सम्प्रेषण तथा एम.फिल. अहिंसा एवं शांति अध्ययन, एम.फिल. स्त्री अध्ययन, के पाठ्यक्रम तथा पी-एच.डी. कार्यक्रम चल रहे हैं। इनके अतिरिक्त सांस्कृतिक पर्यटन प्रबंधन, व्यावसायिक संस्कृति प्रबंधन, योग और लोक चिकित्सा पर पाठ्यक्रम इस विश्वविद्यालय ने प्रस्तावित पाठ्यचर्याओं की विशिष्टता है।

अनुवाद एवं मौखिक भाषांतरण विद्यापीठ

अनुवाद एवं मौखिक भाषांतरण विद्यापीठ में एम.ए. अनुवाद प्रौद्योगिकी और एम.फिल. अनुवाद प्रौद्योगिकी के पाठ्यक्रम तथा पी-एच.डी. कार्यक्रम संप्रति चल रहे हैं। अनुवाद पाठ्यक्रम और प्रयोजनमूलक हिन्दी डिप्लोमा पाठ्यक्रम इस विद्यापीठ की प्रस्तावित पाठ्यचर्या है।

दूर शिक्षा पाठ्यक्रम

दूर शिक्षा पाठ्यक्रम शीघ्र आरंभ किया जाना है, जिसमें स्नातकोत्तर अनुवाद प्रौद्योगिकी और जनसंचार डिप्लोमा पाठ्यक्रम पहले चरण में आरंभ किए जाएंगे।

ग्रंथालय

विश्वविद्यालय में अंकीय (डिजीटल) ग्रंथालय स्थापित करने का प्रस्ताव है।

संतांत्रिकी परिसर (साइबर कैंपस)

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय से अपना एक साइबर परिसर यथाशीघ्र स्थापित करना अपेक्षित है, जिसमें एक विशेषज्ञ-परामर्श स्थल तथा एक व्यावहारिक अध्ययन केन्द्र होगा। यही नहीं, परिसर में और परिसर के बाहर के विद्यार्थियों के लिए सामान्य श्यामपट्ट-वार्त्ता-कंठस्थीकरण प्रणाली (Chalk-talk-rote) के अनुपूरक के रूप में एक अन्योन्यक्रियात्मक बहु जन-संचार साधन तंत्र तथा सूचना अनुशिक्षण प्रणाली के निर्माण के लिए प्रौद्योगिकी के उन्नयन की भी योजना है।

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की अन्तरराष्ट्रीय संबद्धता

हिन्दी के संदर्भ में पाठ्यचर्चा में भारत के अंदर तथा भारत से बाहर की सभी प्रमुख भाषाओं के अध्ययन के लिए राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तरों पर एक मंच का निर्माण करना भी सम्मिलित है।

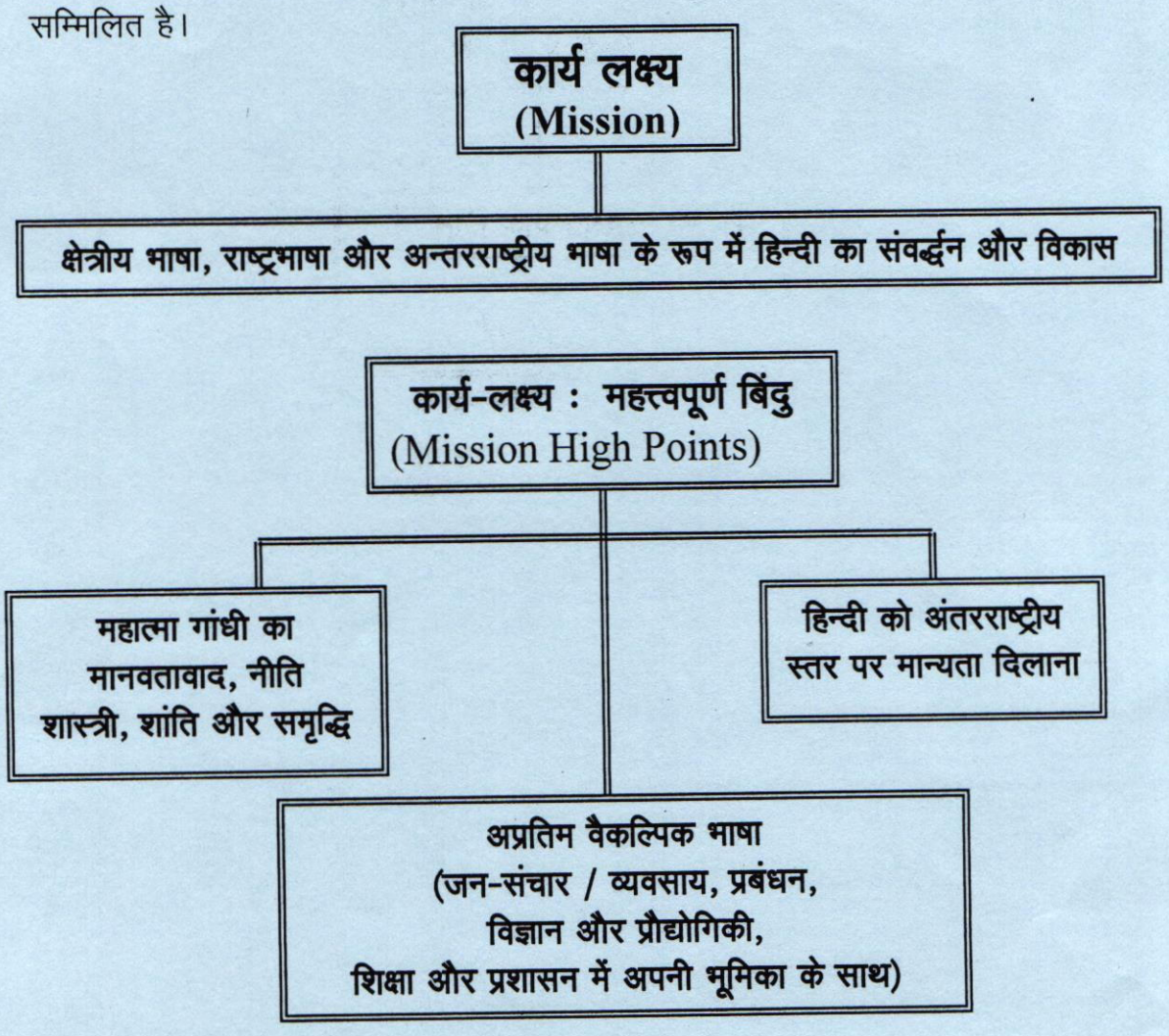

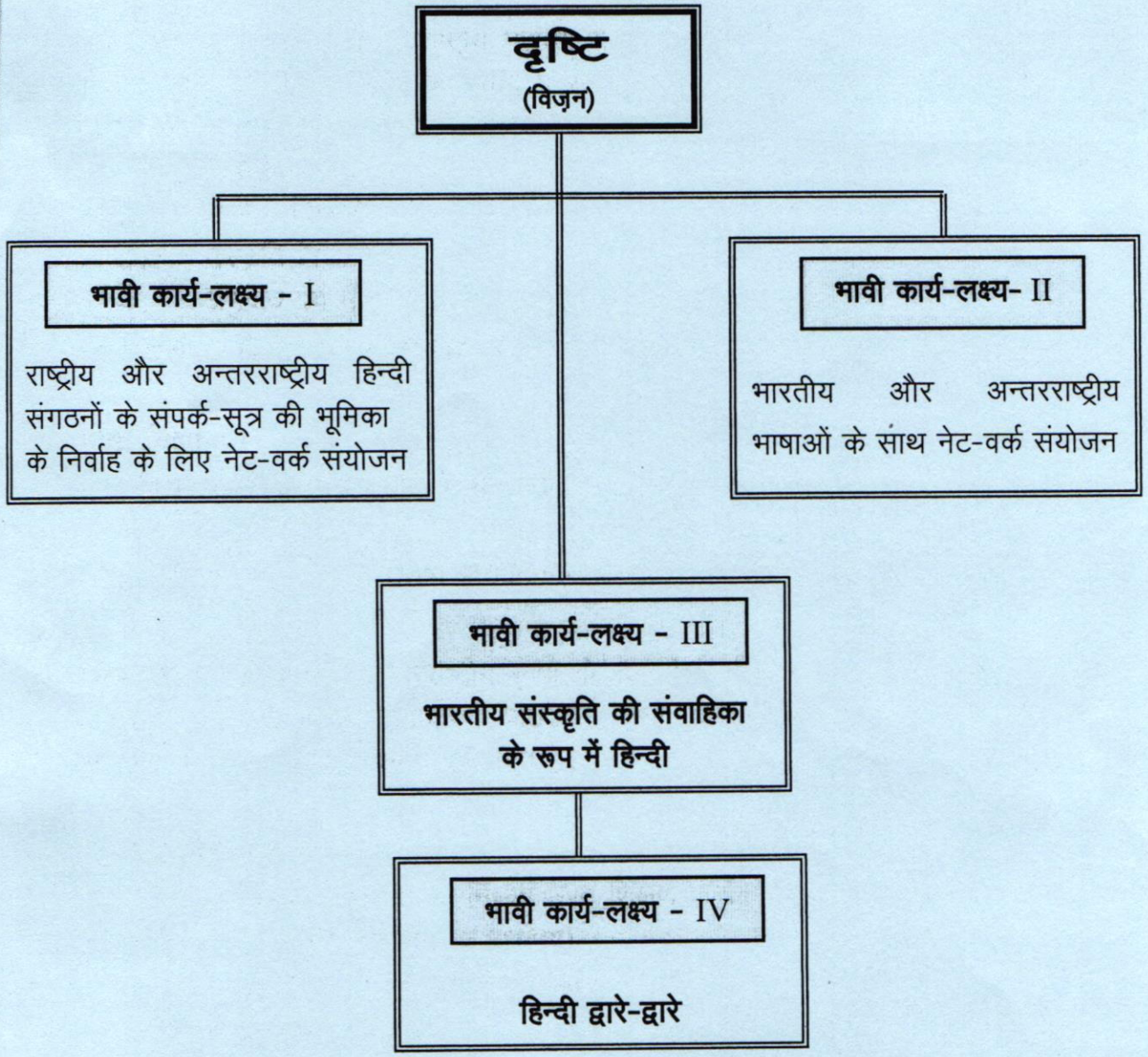
दृष्टि
(विज़न)
भावी कार्य-लक्ष्य - I
राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी संगठनों के संपर्क-सूत्र की भूमिका के निर्वाह के लिए नेट-वर्क संयोजन
भावी कार्य-लक्ष्य- II
भारतीय और अन्तरराष्ट्रीय भाषाओं के साथ नेट-वर्क संयोजन
भावी कार्य-लक्ष्य - III
भारतीय संस्कृति की संवाहिका के रूप में हिन्दी
भावी कार्य-लक्ष्य - IV
हिन्दी द्वारे-द्वारे

वर्तमान परिपेक्ष्य

हिन्दी, गांधी दर्शन और अन्तरराष्ट्रीय महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के केन्द्रीय कार्य क्षेत्र हैं। इन क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए चार अध्ययन विद्यापीठ आरंभ किए गए हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं –

1. भाषा विद्यापीठ
2. साहित्य विद्यापीठ
3. संस्कृति विद्यापीठ
4. अनुवाद एवं मौखिक भाषांतरण विद्यापीठ

इन विद्यापीठों की रूप-रचना परस्पर पूरकता के आधार पर की गई है।

भाषा विद्यापीठ

भाषा विद्यापीठ के अंतर्गत संप्रति निम्नलिखित शिक्षण कार्यक्रम चल रहा है :

1. एम.ए. हिन्दी (भाषा प्रौद्योगिकी)
2. एम.फिल. हिन्दी (भाषा प्रौद्योगिकी)
3. पी-एच.डी. कार्यक्रम

पी-एच.डी. शोध उपाधि, अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी विषय में डिप्लोमा (उपाधि), विदेशियों के लिए हिन्दी नवीकरण पाठ्यक्रम तथा भारतीय और विदेशी भाषाओं में अल्पकालिक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम प्रस्तावित है।

साहित्य विद्यापीठ

साहित्य विद्यापीठ के अंतर्गत संप्रति निम्नलिखित शिक्षण कार्यक्रम चल रहा है :

1. एम.ए. हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य)
2. एम.फिल. हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य)
3. पी-एच.डी. कार्यक्रम

दलित साहित्य पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रस्तावित है।

संस्कृति विद्यापीठ

संस्कृति विद्यापीठ के अंतर्गत संप्रति निम्नलिखित शिक्षण कार्यक्रम चल रहा है :

1. एम.ए. अहिंसा एवं शांति अध्ययन
2. एम.ए. स्त्री अध्ययन
3. एम.ए. जनसंचार माध्यम एवं सम्प्रेषण
4. एम.फिल. अहिंसा एवं शांति अध्ययन
5. एम.फिल. स्त्री अध्ययन
6. पी-एच.डी. कार्यक्रम

पी-एच.डी. शोध उपाधि, सांस्कृतिक पर्यटन में एम.ए. उपाधि तथा सामाजिक कार्य में एम.ए. उपाधि पाठ्यक्रम प्रस्तावित है।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित तीन रोजगार-प्रधान डिप्लोमा पाठ्यक्रम आरंभ करने का प्रस्ताव है :

1. सांस्कृतिक पर्यटन प्रबंधन पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा
2. व्यावसायिक प्रबंधन पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा
3. अंतर-सांस्कृतिक अध्ययन डिप्लोमा।

अनुवाद एवं मौखिक भाषांतरण विद्यापीठ

अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के अंतर्गत संप्रति निम्नलिखित शिक्षण कार्यक्रम चल रहा है :

1. एम.ए. अनुवाद प्रौद्योगिकी
2. एम.फिल. अनुवाद प्रौद्योगिकी
3. पी-एच.डी. कार्यक्रम।

पी-एच.डी. शोध उपाधि तथा प्रयोजनमूलक हिन्दी और अनुवाद प्रौद्योगिकी पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा तथा अनुवाद निर्वचन पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रस्तावित है।

लीला (लैबोरेट्री इन इन्फर्मेटिक्स फार लिबरल आर्ट्स)

सामान्य ज्ञान और कौशल के लिए सूचनाविज्ञान प्रयोगशाला के रूप में 'साइबर तंत्र' विकसित किया गया है। यह डिजिटल सुविधा है, जिसका अवलंबन महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की शिक्षण, अनुशिक्षण, अनुसंधान तथा विस्तार की सारी गतिविधियों में होता है।

विश्वविद्यालय की समग्र गतिविधियाँ यथार्थतः निम्नलिखित आरेख में संक्षेप में दिखाई गई है :

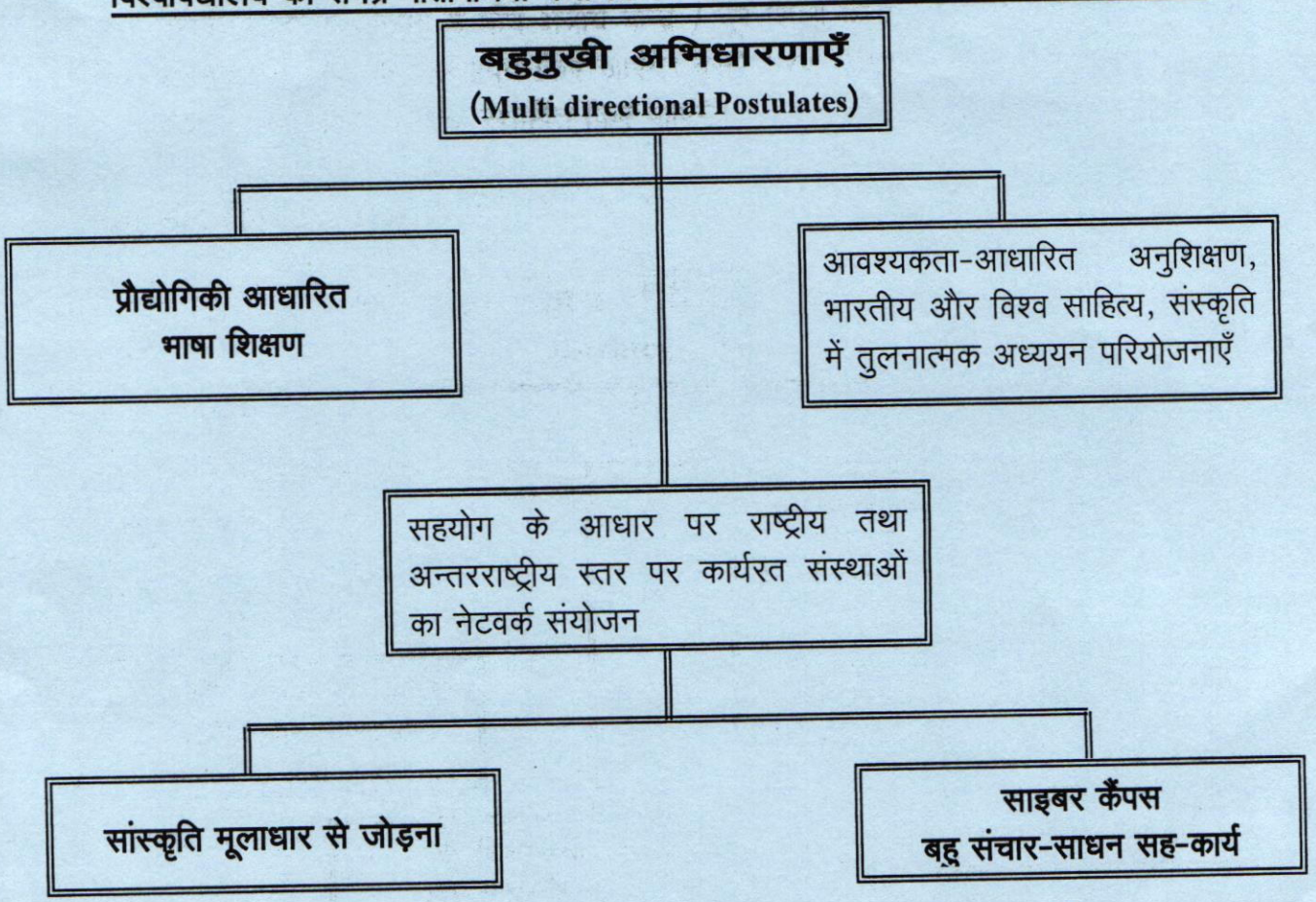

उपर्युक्त चारों विद्यापीठों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नियमित शैक्षिक तथा शैक्षिकेतर स्टाफ की नियुक्ति की कार्रवाई की जा रही है।

भावी कार्य-दिशा

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय आगामी वर्षों में परिसर के अंदर तथा परिसर के बाहर कुछ शैक्षणिक पाठ्यक्रम तथा कुछ विस्तार कार्यक्रम आरंभ करने जा रहा है। विश्वविद्यालय का लक्ष्य है :

(क) नौवीं और दसवीं पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में आरंभ की गई गतिविधियों को सुदृढ़ और सशक्त करना तथा (ख) शृंखला को पूरा करने के लिए ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना की अवधि में कुछ नवीकृत पाठ्यक्रम आरंभ करना।

- ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना की अवधि में लक्ष्यों पर सविस्तार प्रकाश डालने से पूर्व महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय नीति-निर्देशों की आधारभूत भावना पर एक नजर आगे दिए गए प्रस्तावों के औचित्य को समझने में सहायक होगी।
- दसवीं पंचवर्षीय योजना की अवधि में दूर शिक्षा और 'ऑन लाइन' शिक्षा पाठ्यक्रम विकसित किया जाएगा।
- दसवीं पंचवर्षीय योजना में एम.टेक. (भाषा प्रौद्योगिकी) को सी.-डेक के सहयोग से संचालित किया जाएगा।
- दसवीं पंचवर्षीय योजना में जो शैक्षिक पद और गैर-शैक्षिक पद स्वीकृत हुए हैं उनको भरने की प्रक्रिया चल रही है।
- दसवीं पंचवर्षीय योजना में पाँच क्षेत्रीय केन्द्र / दूर शिक्षा केन्द्र– दिल्ली, लखनऊ, कोलकाता, अहमदाबाद और चेन्नै स्थापित किए जाएंगे। दूसरे चरण में भारत के सभी राज्यों में, विदेशों में क्षेत्रीय तथा अध्ययन केन्द्र स्थापित किए जाएँगे।

यह नीचे दिए गए आरेखों से स्पष्ट है :

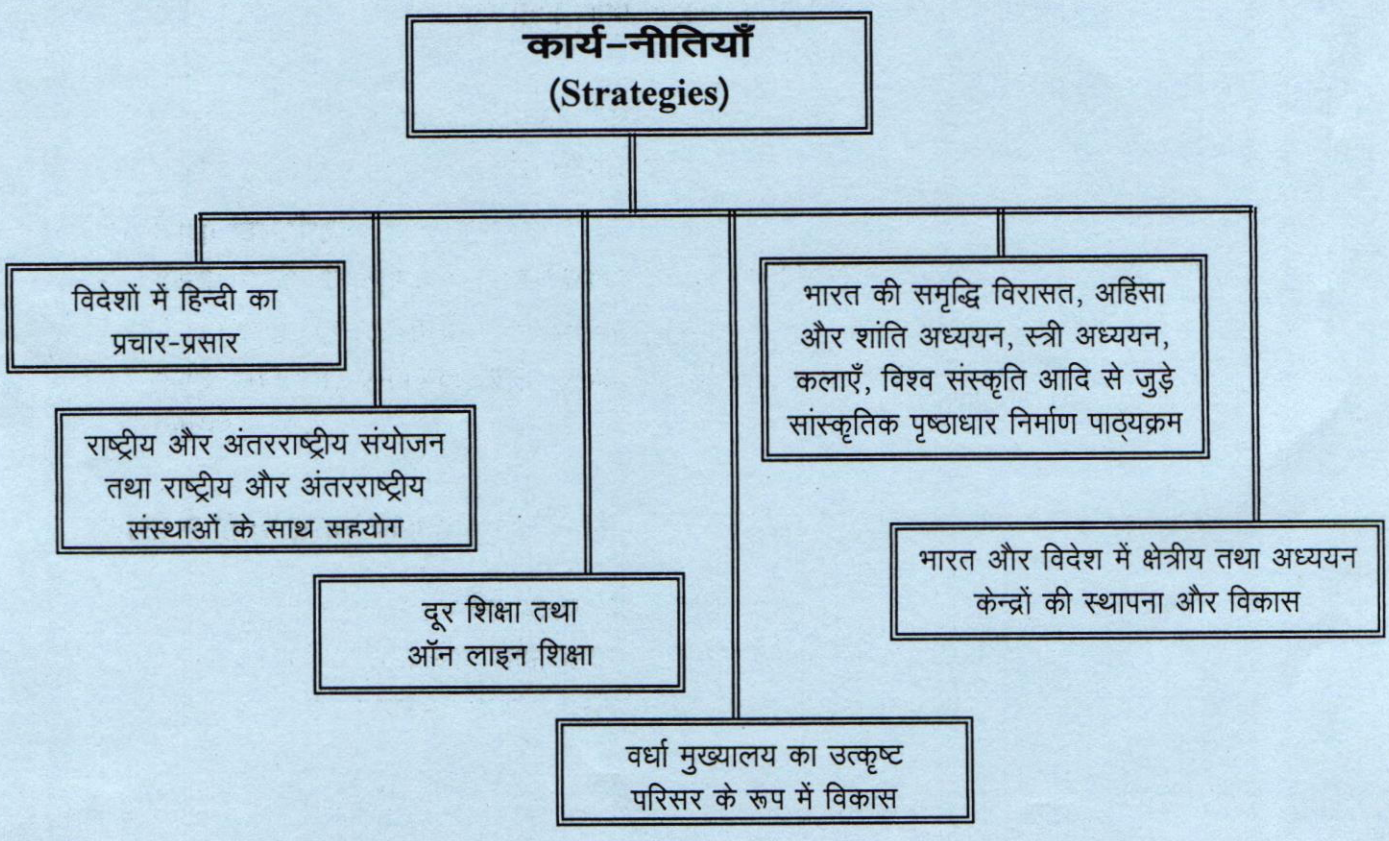

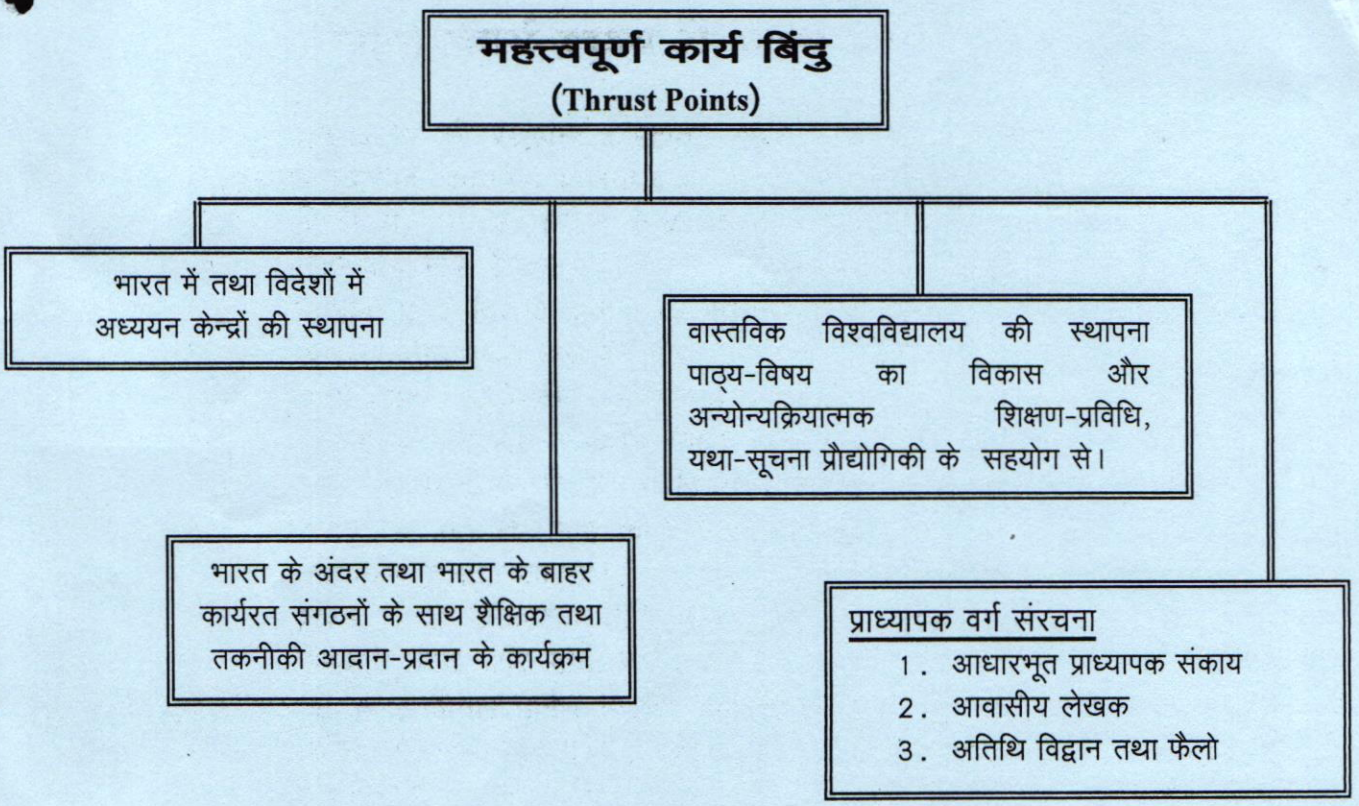

ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में निम्नलिखित तीन नए विद्यापीठों की स्थापना का प्रस्ताव है :

ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान आज की आवश्यकताओं के अनुसार तीन नए विद्यापीठ आरंभ होंगे जिसके अंतर्गत निम्नलिखित पाठ्यक्रम होंगे :

(क) प्रौद्योगिकी विद्यापीठ :

इसमें एम.टैक (भाषा प्रौद्योगिकी) पाठ्यक्रम, एम.टेक. कम्प्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स, बी.टेक. भाषा प्रौद्योगिकी, बी.टेक. कम्प्यूटर भाषा विज्ञान प्रारंभ किया जाएगा।

(ख) प्रबंधन विद्यापीठ :

इसमें एम.बी.ए. सूचना प्रौद्योगिकी, मास्टर आफ टूरिज़्म मैनेजमेंट, बी.बी.ए. तथा ग्रामीण पर्यटन प्रबंधन में डिप्लोमा प्रारंभ किया जाएगा।

(ग) शिक्षा विद्यापीठ :

इसमें पी.जी. डिप्लोमा अनुवाद प्रौद्योगिकी, पी.जी. डिप्लोमा जनसंचार, विश्व भाषा हिन्दी में डिप्लोमा, एम.ए. हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य), एम.ए. स्त्री अध्ययन, एम.ए. अहिंसा एवं शांति अध्ययन, एम.फिल. स्त्री अध्ययन तथा डी.एड. (हिन्दी भाषा शिक्षण) प्रारंभ किया जाएगा।

विदेशों में हिन्दी प्रसार योजना : विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था का प्रस्ताव है।

यह प्रस्ताव है कि दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान सभी विद्यापीठों, साइबर आधारतंत्र अर्थात 'लीला', जनसंचार स्टूडियो और भाषा प्रयोगशाला को सम्यक रूप से व्यवस्थित किया जाए तथा इनके क्रियान्वयन में आधारभूत संकाय तथा गैर-अध्यापक कर्मचारियों को नियुक्त किया जाए।

भावी कार्य लक्ष्य में अन्य योजनाएँ

1) अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना : महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की अन्य योजनाएँ ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान प्रारंभ करने का प्रस्ताव है, यथा–

1. हिन्दी अप्रवासी अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की जाएगी। इसमें भारतीय अप्रवासियों के लिए पांडुलिपि, लेखन और ध्वन्यात्मक सामग्री पर कार्य किया जाएगा।
2. जापान और विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में महात्मा गांधी फ़्यूजी गुरुजी अन्तरराष्ट्रीय शांति अध्ययन केन्द्र को विकसित किया जाएगा।
3. बाबा साहब अम्बेडकर दलित एवं जनजाति अध्ययन केन्द्र के अन्तर्गत दलित एवं अनुसूचित जनजाति अध्ययन होगा।
4. अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी पाठ्यक्रम के अंतर्गत– क) एक वर्ष का डिप्लोमा पाठ्यक्रम, ख) छह माह का नवीकरण पाठ्यक्रम तथा ग) दो माह का ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम चलाया जाएगा।
5. विश्व हिन्दी संग्रहालय और अभिलेखागार : इसके अंतर्गत विश्व हिन्दी साहित्य, संस्कृति केन्द्र और गांधी दर्शन केन्द्र की स्थापना का प्रस्ताव है। इसमें विभिन्न कोशों का संग्रह होगा। दुर्लभ पांडुलिपियों का संग्रह एवं प्रकाशन होगा, मौलिक लेखन एवं काव्य पाठ की व्यवस्था होगी, कालजयी ग्रंथों तथा कथा चयनिकाओं (anthologies) का संकलन होगा। पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध होगी। इसमें दृश्य-श्रव्य माध्यम का प्रयोग होगा। विश्व की हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का संग्रह उपलब्ध होगा। साहित्यकारों की चित्रावली, छवियाँ, शिल्प आदि होंगे।
6. अनुवाद प्रौद्योगिकी तथा संघ और राज्य राजभाषा संबंधी अनुसंधान और प्रशिक्षण केन्द्र
7. महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय प्रकाशन केन्द्र
   - i. हिन्दी की कालजयी कृतियों, भारतीय और विदेशी भाषाओं की अनुदित कृतियों का प्रकाशन।
   - ii. नए उभरते विषयों पर हिन्दी में लिखित पुस्तकों का प्रकाशन, जैसे– सूचना प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, स्त्री अध्ययन, शांति और अहिंसा।
   - iii. त्रैमासिक अनुसंधानपरक और आलोचनात्मक पत्रिका का प्रकाशन। विश्वविद्यालय पहले से ही एक अनुसंधान पत्रिका 'बहुवचन' का प्रकाशन कर रहा है।
   - iv. समीक्षा पत्रिका का प्रकाशन – विश्वविद्यालय पहले से ही एक समीक्षा पत्रिका 'पुस्तक वार्ता' का प्रकाशन कर रहा है।
8. गांधी हिन्दी विश्वमैत्री केन्द्र : इसमें संगोष्ठी, सम्मेलन, विशेष व्याख्यान, फिल्म, बाजार अंतरक्रिया और जन माध्यम कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे ताकि हिन्दी के माध्यम से विश्व के विभिन्न देशों से संबंध स्थापित हो सके।
9. छात्रों के लिए अंतरक्रियात्मक कार्यक्रम

   (क) सुविख्यात विद्वानों, कलाकारों, लेखकों, विचारकों, चिंतकों, आदि को निमंत्रण दिया जाएगा।

   ख) भाषा प्रयोगशाला के लिए इलेक्ट्रानिक सुविधाएँ और उपकरण उपलब्ध कराए जाएंगे।

   (ग) स्टूडियो, महासभाकक्ष, अंतरराष्ट्रीय स्तर के छात्रावासों का निर्माण होगा।

10. डिजिटल ग्रंथालय की स्थापना :

(क) ग्रंथालय सर्वर, ग्रंथालय प्रबंधन साफ्टवेयर, सी.डी.-रोम सर्वर, रेडस कंट्रोल्ड स्टोरेज, स्कैनर, कांटेंट मैनेजमेंट साफ्टवेयर, ओडियो-वीडियो कक्ष आदि का प्रावधान होगा।

(ख) मुद्रण और आन-लाइन पर पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं की व्यवस्था होगी।

11. विदेशों में क्षेत्रीय केन्द्रों की स्थापना : विश्व में विभन्न धर्मों, संस्कृतियों, भाषाभाषियों आदि से संबंधित अध्येताओं के लिए क्षेत्रीय और अध्ययन केन्द्र खोलने का प्रस्ताव है, जिनका वर्गीकरण निम्न प्रकार से होगा :

1. भारतीय मूल निवासी– मारिशस, फीजी, गुयाना, सूरिनाम तथा टेबेगो एवं त्रिनिदाद।
2. भारतीय संस्कृति से समानता रखनेवाले देश– नेपाल, बंग्लादेश, श्रीलंका, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, मलेशिया (बाली), सिंगापुर और थाईलैंड।
3. हिन्दी में रुचि रखनेवाले देश :

क) एशियाई देश : चीन, जापान, उजबेकिस्तान, कोरिया, ईराक, दुबई, ईरान, टर्की, सऊदी अरब आदि।

ख) यूरोप : यू.के., फ्रांस, हंगरी, स्पेन, जर्मनी, रूस, बल्गेरिया, पोलैंड।

ग) अमेरिका सहित दक्षिण अमेरिका, कनाडा, कोलंबिया, ब्राजील, मेक्सिको, पेरु, क्यूबा आदि।

12. विभिन्न परियोजनाएँ :

इसके अंतर्गत कुछ परियोजनाएँ प्रारंभ की जाएगी :

क) हिन्दी सूचना विश्वकोश।

ख) विश्व के कालजयी ग्रंथों का अनुवाद।

ग) हिन्दी पोर्टल– विश्व हिन्दी सूचना संजाल।

घ) अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी कोश का निर्माण।

ङ) पर्यटन एवं बाज़ार में हिन्दी पर अनुसंधान।

च) व्यापार प्रबंधन में हिन्दी की भूमिका अर्थात बाज़ार हिन्दी।

छ) मशीनी अनुवाद पर एक संश्लेषणात्मक कार्यक्रम बनाना।

ज) विश्वभाषाओं के साथ हिन्दी का संपर्क–समाजभाषावैज्ञानिक और सांस्कृतिक अध्ययन।